

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 1152

दिनांक 30 जुलाई, 2024

कृषि उत्पादकता पर बढ़ते तापमान का प्रभाव

1152. श्री दीपक अधिकारी (देव):

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) बढ़ते तापमान और वर्षा के बदलते पैटर्न देश में कृषि उत्पादकता को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं; और
- (ख) उक्त मुद्दे के समाधान के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे उपायों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) एकीकृत कम्प्यूटर सिमुलेशन मॉडलिंग अध्ययनों से यह पता चला कि अनुकूलन उपायों की अनुपस्थिति में तापमान तथा वर्षा में बदलाव के संबंध में जलवायु परिवर्तन पूर्वानुमानों में वर्ष 2050 में बारानी चावल की उपज में 20% तक तथा 2080 के परिदृश्य में 47% तक की कमी आने की संभावना है। जबकि, सिंचित चावल की उपज में वर्ष 2050 में 3.5% तक और वर्ष 2080 के परिदृश्य में 5% तक की कमी, गेहूं की उपज में वर्ष 2050 में 19.3% तक तथा वर्ष 2080 के परिदृश्य में 40% तक की कमी आने की संभावना है। वहीं खरीफ मक्का की उपज में वर्ष 2050 एवं वर्ष 2080 के परिदृश्य में 18 से 23% तक की कमी आने की संभावना है। सोयाबीन की उपज में वर्ष 2030 में 3 से 10% तक और वर्ष 2080 के परिदृश्य में 14% तक की बढ़ोतरी होने की संभावना है।

(ख) देश में मौसम संबंधी चुनौतियों को कम करने के लिए भारत सरकार टिकाऊ कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMSA) को लागू करती है। एनएमएसए में तीन प्रमुख घटक शामिल हैं यथा बारानी क्षेत्र विकास (RAD); ऑन फार्म जल प्रबंधन (OFWM); तथा मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (SHM)।

बारानी क्षेत्र विकास, एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS) पर फोकस करती है तथा इसके अंतर्गत उत्पादकता को बढ़ाने और जलवायु भिन्नता के साथ सम्बद्ध जोखिमों को कम करने तथा साथ ही सूखा एवं बाढ़ जैसी प्रतिकूल मौसम घटनाओं के प्रभाव को कम करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

इसके साथ ही भारत सरकार, सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से खेत स्तर पर बड़ी हुई जल उपयोग प्रभावशीलता के लिए प्रति बूंद- अधिक फसल (पीडीएमसी) की केन्द्र द्वारा प्रायोजित स्कीम को भी लागू करती है।

मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन (SHM) के अंतर्गत जलवायु अनुकूलता के लिए मृदा स्वास्थ्य में सुधार लाने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

निक्रा (NICRA) के माध्यम से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा कृषि में जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित किया जाता है जो कि देश के संवेदनशील क्षेत्रों का समाधान करती हैं और परियोजना के परिणाम से सूखा, बाढ़, पाला, लू आदि जैसी प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील जिलों एवं क्षेत्रों को मदद मिलती है।
